The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

विशुद्ध भारतीय कविः नज़ीर अकबराबादी

डॉ0 शमशाद अली

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गाँधी फैज़–ए–आम कॉलेज, शाहजहाँपुर, Email: shamshadspn01@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648169

समाज और संस्कृति भारतीयता की आत्मा हैं। यदि काई रचनाकार इन्हें अपने रचना जगत का केन्द्र बिन्दु स्वीकार करता है। तो उसे हम विशुद्ध भारतीय रचनाकार होने का प्रमाण–पत्र प्रदान कर सकते हैं। मनुष्य समाज में रहकर विभिन्न नीतिगत सिद्धांतों एवं संस्कारों से स्वयं को जोड़कर अपने जीवन में सरसता एवं आनंद का आभास करता है जिस के आधार पर उसका जीवन सुचारू रूप में चलता रहता है। समाज के रीति–रिवाज और संस्कार उसे समाज में व्यस्त और एक दूसरे से जोड़े रखते हैं। विभिन्न धार्मिक एवं समाजिक त्यौहार इस जुड़ाव में सहायक होते है।

नज़ीर कालीन भारत हिन्दु–मुस्लिम दो समाजों एवं धर्मों का संगम है। नज़ीर ने इन दोनों धर्मों एवं समाजों को अपनी रचनाओं के केन्द्र बिन्दु के रूप में स्वीकार किया है। इन रचनाओं में कहीं भी भारतीयता के इस पक्ष से पलायन दृष्टिगत नहीं होता। उन्होंने दोनों धर्मों एवं समाज से सम्बन्धित इस पक्ष को बहुतायत से उजागर किया है। मुस्लिम त्यौहारों में सबसे बड़ा और खुशी का त्यौहार ईद या ईद–उल–फितर का त्यौहार होता है। लोग नज़ीर काल में शब–ए–बराअत को भी त्यौहार के रूप में मनाने लगे हैं। नज़ीर ने इन दोनों पर आठ–दस नज़में कहीं हैं। ईद की खुशी और त्यौहार का सौदंर्य नये वस्त्र और ईद के विशिष्ट पकवान हैं जिन पर नज़ीर ने प्रकाश डाला है–

पिछले पहर से उठके नहाने की धूम है।
शीरो[12]–शकर सिवैयां पकाने की धूम है।
पीरों[13]–जवां को नेअमते[14] खाने की धूम है।
लड़कों को ईदगाह के जाने की धूम है।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की खुशी।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की खुशी।।[1]

यहाँ नज़ीर ने बूढ़ों, जवानों और लड़कों के प्रातः काल उठकर नहाने–धोने और ईदगाह जाने की तैयारी के साथ ईद के पकवानों शीर–सिवैयों आदि का भी बख़ान किया है। उन्होंने यह तथ्य भी दर्शाया है कि ऐसी खुशी किसी त्यौहार की नहीं होती जैसी इस ईद की होती है।

नींद आती थी न हरगिज, भूक लगती थी ज़रा।
यह खुशी होती थी जब होता था आना ईद का। [2]

नज़ीर ने 'शब्बरात' नज़्म में पकवानों हल्वें–माँड़े, चपाती विभिन्न प्रकार की आतशबाज़ी आदि का वर्णन किया है। इस में अमीर–गरीब के अलग–अलग अंदाज से पकवान बनाने खाने के साथ–साथ फातिहा देने वाले मुल्लाओं का ग़रीब के घर फ़ातिहा को जाने से मुँह छुपाने तक का वर्णन है। ऐसा इसिलए वहाँ उतना अच्छा खाने को नहीं मिलेगा जितना अच्छा अमीर के घर। यथा–

मुल्ला जो देने फ़ातिहा घर–घर में जाते हैं।
हलवा कहीं, कहीं वह चपाती उड़ाते है।।
मुफ़्लिस कोई बुलावे तो मुंह को छुपाते है।
शक्कर का हल्वा सुनते ही बस दौड़े जाते हैं।।
कहते हुए यह दिल में अहा! हा ! री शब्बरात।। [3]

इस के साथ ही नज़ीर ने विभिन्न आतिशबाज़ियों जैसे–अनार, पटाख़े, फुलझड़ी, हतफूल और घनचक्कर आदि की चर्चा करते हुए वस्त्र और शरीर आदि के झुलसजाने का वर्णन भी किया है।

दूसरी ओर नज़ीर ने हिन्दु त्यौहारों होली–दीपावली आदि पर अनेक नज़्में प्रस्तुत की हैं। होली पर बीस नज़्में रचकर नज़री ने इस त्यौहार के प्रति अपने विशिष्ट आकर्षण का परिचय दिया है। इन नज़्मों के अध्ययन से यह तथ्य प्राप्त हुआ कि नज़ीर ने होली पर रचनाएँ प्रस्तुत करने में इस के समस्त गुण–दोषों पर अपनी काव्य प्रतिमा का परिचय दिया हैं होली रंगो का त्यौहार है। नज़ीर ने रंगों, पिचकारी, गुलाल, अबीर आदि से होली की नज़्मों में रंग भरे है, वे आद्वितीय अनुपम और अनोंखें हैं। नज़ीर ने आगरा की होली को सब से सुंदर बताया है लेकिन ब्रज की होली और मुख्यतः कृष्ण–राधा एवं ग्वालियों के संग खेली गई होली की बात ही कुछ और है। यथा–

जब देर तलक मनमोहन ने वां होरी खेली रंग भरी।
सब भीगी भीड़ जो आई थी साथ उनके ग्वालों वालों की।।
तन भीगा किशन कन्हैया का यों रंगों की बौछार हुई।
और भीगी राधागोरी भी और उनकी संग सहेली भी।।

डफ बाजें राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े, हुई धूम कदम की छैयन में।। [4]

विशुद्ध भारतीयता को केन्द्र बिन्दु मानकर यदि हिन्दी साहित्य के मुसलमान कवियों को परिबद्ध किया जाए तो इसमें जहाँ अमीर खुसरों, मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम, रसखान, उस्मान, शेख नबी आदि दृष्टि गोचर होगें, वहीं एक ज्योतिर्मयी नाम नज़ीर अकबराबादी का होगा। क्योंकि अगबराबाद ब्रज क्षेत्र होने के साथ–साथ मुग़ल शसकों का गढ़ भी रहा है। इसलिए यहाँ की संस्कृति भरतीय गंगा–जमुनी संस्कृति का द्योतक रहीं हैं। संयोगवंश नज़ीर का जन्म– स्थल अगबराबाद रहा है। इसी कारण बाल्यावस्था से ही नज़ीर के मन–मस्तिष्क में समन्यवयात्मक संस्कृति की जड़ें घर कर गयी। पारिवारिक संस्कारों, युगीन परिवेश और परिस्थितियों ने जड़ों को उर्वरक के रूप में शक्ति प्रदान की।

परिणामस्वरूप नज़ीर अगबराबादी के चेतनावचेतन में विशुद्ध भारतीय संस्कार पुष्पित और पल्लवित हो गये। जब नज़ीर अगबराबादी ने काव्य–क्षेत्र में पदार्पण किया तो यही संस्कार विभिन्न सुन्दर पुष्पों के समान कविताओं के रूप में महक उठे। इन्हीं नाना रूपों–रंगों, आकारों–प्रकारों और सुगन्धों पर आधारित पुष्पों को जब समन्वित किया गया तो नज़ीर का काव्य एक अनुपम गुलदस्ते के रूप में शोभायमान हो उठा। नज़ीर–काव्य का अध्ययन उनकी विशुद्ध भरतीयता का सबल प्रमाण है। नज़ीर देश के कण–कण से पूर्ण परिचित थे। उन्होंने धर्म और समाज से सम्बन्धित अधिकांश विषयों पर कविता के माध्यम से अपनी लेखनी के चमत्कार प्रस्तुत किये। यदि एक ओर उन्होंने हम्द, इश्क अल्लाह, खुदा की तारीफ, नात हज़रत मुहम्मद, मनक़बत हज़रत अली, तारीफ़ गुरूगंज बख़्श की आदि कवितायें लिखीं तो दुसरी ओर परमात्मा की याद, गणेशजी की स्तुति, हरि की तारीफ, कृष्ण कन्हैया की तारीफ, तारीफ भैरों की और गुरूनानक शाह जैसे शीर्षकों के अन्तर्गत भी अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने हम्द में अल्लाह का शुक्र इस प्रकार अदा किया–

तेरा शुक्रो ऐहसां हो किस से अदा।
हमें मेहर से तूने पैदा किया।
किये और अल्ताफ़ बे इंतिहा।
''नज़ीर'' इस सिवा क्या कहे सर झुका।
ये सब तेरे इकराम हैं या करीम। [5]

सृष्टि– निर्माण में धरती का अपना विशेष महत्व है। घरों को सुंदर, आकर्षित बनाने के लिए सृष्टि कर्ता ने इसमें विभिन्न वस्तुएँ बनाई। धरती को जल पर रखा। उस में पर्वत मैदान, समुद्र, हरियाली, वनस्पतियों, फूल–फल और मेवे आदि की सुनियोजित उत्पत्ति की। यथा–

ज़मीं को देखो तो कुल आब पर दिया हैं क़रार।
फिर उसमें और बनाये हैं कोहो बर्रो बहार।
किया है (1) और नबातात के तई इज़हार।
निकाले उनसे गुलो मेवा शाख गुल औंर बार
सब उसके लुत्फों करम के हैं आम यह इनआम। [6]

नज़ीर जानते हैं कि अल्लाह की हम्द के साथ रसूल की प्रशंसा करना भी उनका पुनीत साहितियक कर्तव्य है। इसीलिए उन्होंने अनेक नातिया कविताएँ भी लिखीं। मुसलमान कलमा–ए तैयबा पढ़कर अपने मोमिन होने का प्रमाण देता है। कलमा को सबसे बड़ी नेकी कहा जता है। इसे निरंतर दिल में ज़बान से ऊंगलियों पर गिन–गिन कर पढ़ते रहना पुण्य कार्य है। नज़ीर ने इस तथ्य को निम्न काव्य–पंक्तियों में प्रस्तुत किया है–

रख अपने दिल में ऐ आदम के बिन कलमा मुहम्मद का।
और अपनी उंगलियों ऊपर भी गिन कलमा मुहम्मद का।
पढ़ें हैं सब परी और देव जिन कलमा मुहम्मद का।
मुसलमां हो तो मत भूल एक छिन कलमा मुहम्मद का।
पढ़ाकर सिद्क दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का। [7]

अल्लाह की हम्द और नात के साथ–साथ नज़ीर ने गणेश के प्रति भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि–

जो–जो शरन में आया हैं, कीन्हा उसे सनाथ।
भव सिन्धु से उतारा है, दम में पकड़ के हाथ।
यह दिल में ठान अपने और छोड़ सबका साथ।
तू भी नज़ीर चरणों में अपना झुका के माथ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी।
देवेंगे रिद्धि–रिद्धि और धन–धन गनेश की। [8]

नज़ीर अल्लाह को सृष्टि कर्ता कण–कण में व्याप्त, सब से जुदा गुणों वाला मानते है। मुस्लिम आस्था एवं साहित्य परम्परा के अंतर्गत नज़ीर ने हम्द, नात, मनक़बत, कसीदा आदि सभी विधाओं की रचना की है। उन्होंने कृष्ण को भी इसी रूप में मान्यता प्रदान करते हुए निम्न विचार व्यक्त किय–

वही सब में रहे हरि आप हरि हर से नियारा है।

वही है देख लो प्रत्यक्ष जग उसका पसारा है।

उसी ने बात के कहते ही यह रचना रची सारी।

उन्होंनें क्या अलग ब्रह्माण्ड यह मन्दिर संवारा है। [9]

इससे भी आगे बढ़कर नज़ीर ने कृष्ण को सृष्टि रचयिता के साथ ब्रज बसैया बताते हुए लेखक एवं कथाकारों को उनके गुण अथवा विशेषताओं को लेखनी बद्ध करने में असमर्थ बताया। ये समस्तगण लिख–लिखकर थक गए किन्तु कृष्ण का भली–भॉति एवं पूर्ण रूपेण बखान न कर सके। कृष्ण कन्हैया की तारीफ़ कविता में नज़ीर कहते हैं कि–

सिफ्तो सना में सृष्टि रचैया की क्या लिखूं।

औसाफी खूबी ब्रज के बसैया की क्या लिखूं।

पैदायश अब में कुल के करैया की क्या लिखूं।

कुछ मदह में उस सुध के लिवैया की क्या लिखूं।

तारीफ़ कहों कृष्ण कन्हैया की क्या लिखूं।

श्री वेद व्यास जी ने बनाये कई पुरान।

लिखने में तो भी आया नहीं कृष्ण का बयान।

लिख–लिख के थक रहें हैं हर एक कर नविश्त ख्वान।

कहती है जो कलम मेरी वह हैं जली ज़बान । [10]

हम्द और स्तुति के साथ सिक्ख–सम्प्रदाय से सम्बन्धित गुरूनानक शाह नामक शीर्षक से कविता की रचना करके यह सिद्ध कर दिया कि वह विशुद्ध भारतीय हैं। और भारत के प्रत्येक धर्म एवं सम्प्रदाय में उनकी समान आस्था है। गुरूनानक शाह के पूर्ण गुरू होने और उनमें आस्था रखने का भाव कविता की इन पंक्तियों से पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गया है–

हैं कहते नानक शाह जिन्हें वह पूरे है आगाह गुरू।

वह कामिल रहबर जग में हैं यूँ रौशन जैसे माह गुरू।

मक़्सूद मुराद उम्मीद सभी, बर लाते हैं दिलख़्वाह गुरू।

नित लुत्फों करम से करते हैं हम लोगों का निरबाह गुरू।

इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू।

सब सीस नबा अरदास करो, और हर दम बोलो वाह गुरू। [11]

संदर्भ–

- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 326
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 323
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 316
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 367
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 02
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 20
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 27
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 75
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 76
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 79
- सम्पादक प्रोफेसर नज़ीर मोहम्मद, नज़ीर ग्रन्थावली – पृ0 सं0 84